डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

Date 12.08.2020 Page No.

विषय- संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
तृतीय वर्ष, पंचम पत्र
वैदिक साहित्य का इतिहास
ऋग्वेद का रचना काल (क्रमशः पूर्व से आगे)

(4) श्री शंकर बालकृष्ण दीक्षित

इन्होंने उपर्युक्त शतपथ ब्राह्मण का समय 2500 ई०पू० मानकर चारों वेदों की रचना के लिए 250 × 4 = 1000 वर्ष का समय मानकर ऋग्वेद का रचनाकाल 3500 ई०पू० माना है।

(5) श्री याकोबी

याकोबी ने भी ज्योतिष को आधार माना है। वे ध्रुव तारा अपना लक्ष्य मानते हैं। ध्रुवतारा भी अपने स्थान से पीछे हटता है। तदनुसार उन्होंने ऋग्वेद का समय 4500 ई०पू० माना है।

(6) मैक्समूलर

मैक्समूलर ने बुद्ध को आधार मानकर वैदिक साहित्य का प्रारम्भ 1200 ई०पू० माना है। (क) 1200 ई०पू० से 1000 ई०पू० छन्दःकाल, फुटकर वैदिक मन्त्र रचनाएँ। (ख) 1000 ई०पू० से 800 ई०पू० मन्त्रकाल वैदिक संहिताओं की रचना। (ग) 800 ई०पू० – 600 ई०पू० ब्राह्मणकाल – ब्राह्मण ग्रन्थों की रचना। (घ) 600 ई०पू० – 400 ई०पू० सूत्रकाल – श्रौत और गृह्य सूत्रों आदि की रचना। प्रारम्भ में यह मत अत्यन्त प्रचलित था, किन्तु 1400 ई०पू० के बोगाज़कोई के

शिलालेख की प्राप्ति से यह मत सर्वथा ध्वस्त हो गया।

(ग) विण्टरनित्स

ने सभी मतों की विस्तृत आलोचना के बाद अपना सामन्वयात्मक मत दिया है कि वैदिक काल २५०० ई०पू० से ५०० ई० पू० है। ऋग्वेद का समय २५०० ई०पू० है।

निष्कर्ष

स्वामी दयानन्द आदि ने वेदों का रचनाकाल लाखों वर्ष पूर्व माना है। वह शास्त्रीय दृष्टि से पूर्णतया सत्य होने पर भी व्यावहारिक दृष्टि से उपयोगी नहीं है, क्योंकि लाखों वर्षों का, इतना ही नहीं अपितु आज से १० हजार वर्ष पूर्व का भी कोई प्रामाणिक सुसंबद्ध इतिहास नहीं मिलता है। जिसके आधार पर कुछ कहना संभव हो।

प्रो० मैक्समूलर के मत की चर्चा की जा चुकी है। बोगाजकोई के शिलालेख की प्राप्ति के साथ ही उनका मत ध्वस्त हो गया। प्रो० विण्टरनित्स सामन्वयवादी हैं। उन्होंने बोगाजकोई के शिलालेख के आधार पर १५०० ई०पू० को अवर सीमा मानकर वैदिक संहिताओं के लिए १ सहस्र वर्ष और जोड़कर ऋग्वेद का समय २५०० ई० पू० मानते हैं तथा वैदिक साहित्य की समाप्ति महावीर और बुद्ध से पूर्व अर्थात ८५० ई०पू० से ५०० ई०पू० के मध्य मानते हैं। इस मन्तव्य में घोर अंसगति के दोषों का निराकरण हो जाता है, किन्तु पूर्वसीमा २५०० ई०पू० ही हो, ~~क्योंकि~~ इसके लिए कोई प्रमाण या आधार नहीं है।

Scanned with CamScanner

Date __/__/____ Page No.: _____

श्री लोकमान्य तिलक, श्री दीक्षित और प्रो० याकोबी के मत प्रायः समान आधार पर हैं और उनके द्वारा निर्धारित तिथियाँ भी लगभग समान हैं। इनके मत निराधार न होकर साधार हैं। इनकी युक्तियाँ और प्रमाण तथ्यों पर निर्भर हैं। ज्योतिष-सम्बन्धी गणनाओं को पुष्ट प्रमाणों के अभाव में काल्पनिक अतिशयोक्तिपूर्ण या मनगढन्त का अशोभनीय है। वैदिक संहिताओं, ब्राह्मणग्रन्थों, आरण्यकों, उपनिषदों, श्रौत आदि सूत्रों एवं अन्य वेदांगों के लिए लगभग 3 हजार वर्ष का समय अपेक्षित है। अतः सुविधा एवं व्यावहारिक दृष्टि से वैदिक साहित्य का समय 4 सहस्र ई०पू० से लेकर लगभग 1 सहस्र ई०पू० तक रखा जासकता है। इति।

Scanned with CamScanner